ससजगग, सभरय (11-12) [ससजाः प्रथमे पदे गुरू चेत्। सभरा येन च मालभारिणी स्यात् Vr. 4. 9. 1] मालभारिणी, वसन्तमालिका, औपच्छन्दसिक, सुबोधिता, प्रिया.

ससससलग, नभभर (11-12) [सयुगात् सलघू विषमे गुरुः। युजि नभौ च भरौ हरिणप्लुता Vr. 4. 8] हरिणप्लुता.

भभतलग नजनसग (11-13) [भाति नरां भगणाभ्यां तलगैः। नजनसगैरपि विलसितलीला Jk. 3-17] विलसितलीला.

ततजगग, तभजजगग (11-14) [चूडामणिस्तद्वयजा गुरू चेद्। प्रज्ञामहोदयमता तभजा जगौ गः Jk. 3. 25] चूडामणि.

जरजर, र (11-3) [ज्रज्रा रः शिखिण्यत्यये शिखण्डी H. 3. 25] शिखण्डी.

ननय, ममग (12-7) [पुरमितनगणयमथ, मौ गः। क्षान्तिः प्रोक्ता चूडेयम्॥ Jk. 3. 18] क्षान्ति, चूडा.

भभभभ, भभभगग (12-11) [आमलकी भचतुष्टयमत्र तु। भत्रयगा गिति सैव च चुक्षा। Jk. 3. 20] आमलकी, चुक्षा.

जतजर, ततजर (12 12) [(विषमे) जतौ जरौ शङ्खनिधिः। (समे) तु तौ जरौ। श्रीपाल्यकीर्तीशमते सुनन्दिनी Jk. 3. 21.] शङ्खनिधि, सुनन्दिनी.

जभसय, तभसय (12-12) [तथोदिता यतिरिह जाद्भसौ यः। ताद्भः सयावपि विपरीतभामा Jk. 3. 24] विपरीतभामा.

ततजर, जतजर (12-12) [तौ ज्रौ तथा पद्मनिधिर्जतौ जरौ। स्वयम्भुदेवेशमते तु नन्दिनी॥ Jk. 3. 22] पद्मनिधि, नन्दिनी.

तभसय, जभसय (12-12) [भामा भवेद्भुवि गतिभाग्विरामा। तभौ यदा सयमथ जाद् भसौ यः। Jk. 3. 23] भामा.

ननभभ, ननरर (12-12) [अयुजि ननभभाः समकेऽपि तु। नयुगरयुगलं तदा कौमुदी॥ Vr. 4. 10. 1] कौमुदी.

नजजर, सजयजग (12-13) [यदि विषमे भवतो नजौ जरौ। सजयाः समे जगुरू मञ्जुसौरभम् Vr. 4. 10. 2] मञ्जुसौरभ.

ननरय, नजजरग (12-13) [नगणयुगरयेण पुष्पिताग्रा। नजजरगैर्विदिता जिनव्रतांशैः Jk. 3. 12) पुष्पिताग्रा.

रजरज, जरजरग (12-13) [ओजे परावती रज्रा जोऽनोजे तु जरौ ज्रगाः] परावती, यवध्वनि, यवमती, यववती.

रजरज, तरजरग (12-13) [रो जरौ जसंयुतौ पदे पदेऽथ। युग्मे तरौ जरौ गुरुर्मृगी यवानी Vr. 4. 10. 3.] मृगी, यवानी.

नभभर, नभभभर (12-15) [(ओजे) नभभ्रा, (अनोजे) नभिरा मकरावली H. 3. 12] मकरावली.

जरजरग, रजरज (13-12) [ज्रज्रगा यववतीव्यत्यये र्जर्जाः षट्पदावली H. 3. 11] षट्पदावली.

सजसजग, सजसस (13-12) [ओजे सज्सजगा युक्ते सज्ससा मितभाषिणी। Mm. 22. 5] मितभाषिणी.

रजरजग, जरजरग (13-13) [(ओजे) रजौ रजौ गो, (अनोजे) जरौ जरौ गो यववती Rm. 2. 27] यवमती.

ननननस, ननभनलग (15-14) [विषधरविरमणमुदधिनगणसा यतियतिरुरुगी ननभनलयुगा। Jk. 3. 19] उरुगी.

जरजरजग, र (16-3) [(ओजे) ज्रज्रा ज्गौ नितम्बिनीव्यत्यये, (अनोजे) रः सारसी H. 3. 22] सारसी.

तभरजरगग, रजरय (17-12) [ओजे तपरौ भरौ जरौ गुरू समे जौं यौं। कीर्तिता बुधैरियं तु षट्पदाख्या Vr. 4. 12. 1] षट्पदा.

भरनजनलग, नजभजनस (17-18) [(ओजे) भ्रन्जनलगा भैः (अनोजे) न्जभ्जनसाष्टैः मानिनी H. 3. 19] मानिनी.

भरनभनलग, नजभजनस (17-18) [(ओजे) स्यादिह मानिनी दिशि यतिः भरनभनलगाः। (युजि) नजभजना गणाः ससहिता यदि हरविरतिः Jk. 3. 14.] मानिनी.

जरजरजरलग, र (20-3) [(ओजे) त्रिर्ज्रौ ल्गौ वारुणीव्यत्यये रोऽपरा H. 3. 25] अपरा.

सभतयसभगग, सभतयसस (20-18) [सभतैर्यसभैर्गाभ्यां युक्ता विषमपादयोः। सभतैर्य्ससैर्युक्ता कलिकाललिता युजोः। Mm. 22. 7-8] कलिकाललिता.

जरजरजरजर, र (24-3) [(ओजे) चतुर्ज्रौ वर्तसिनीव्यत्यये रो (युजि) हंसी। H. 3. 25] हंसी.

IV वर्णवृत्तः - विषमचतुष्पदी

(Figures within brackets indicate the number of letters regardless of their quantity.)

[वक्त्रं नाद्यान्नसौ स्यातामब्धेर्योऽनुष्टुभि ख्यातम् Vr. 2. 21.] वक्त्र अनुष्टुप्.

(4 ग + लगगग) × 4 [Bh. 16. 131-132] वक्त्र अनुष्टुप्.

(**रगग, मगग, यसगग, जसगग**) [Utpala. v. 56] वक्त्र अनुष्टुप्.

(4 ग + **लगगग**) in 2 and 4 Only [युजोश्चतुर्थतो जेन पथ्यावक्त्रं प्रकीर्तितम् Chm. 5. 3] पथ्यावक्त्र.

(4 ग + **लगगग**) × 4 [Sb. 3. 16] सुवक्त्र.

(4 + **लगगग**) in 1 and 3 only [जगणोऽब्धेर्यदौजयोर्यगणो युग्मयोश्चेत्थम्। विपरीतोक्तलक्षणाद्विपरीतादि पथ्या स्यात् Jk. 4. 4 or ओजयोर्जेन वारिधेस्तदेव विपरीतादि Vr. 2. 23] विपरीतपथ्या.

(**ससगग, ससलग**) × 2 [Bh. 16. 121] पथ्यावृत्त.

(**ससलग, ससगग**) × 2 [Bh. 16. 122-123] विपरीतपथ्या.

(4 + न + 1) in 1 and 3 only [चपलावक्त्रमयुजोर्नकारश्चेत् पयोराशेः Vr. 2. 24] चपलावक्त्र.

(6 + ल + 1) either in 2 and 4 or in all 4 and other varieties of विपुला like तविपुला [यस्यां लः सप्तमे युग्मे सा युग्मविपुला मता Vr. 2. 25] विपुलावक्त्र.

(8-12-16-20) [प्रथमोऽयमष्टवर्णः (अनुष्टुप्) द्वादशवर्णो द्वितीयकः पादः। षोडशवर्णोऽथ तृतीयो, विंशत्यक्षरस्तुर्यः। यस्य तदेतत्पदचतुरूर्ध्वं नानागति त्रयोदशधा॥ Jk. 4. 16] पदचतुरूर्ध्व.